71

संस्मरण

सुरजो नायक

डॉ. नेमनारायण जोशी

लेखक–परिचै

डॉ. नेमनारायण जोशी रौ जनम 31 जनवरी सन् 1926 में नागौर जिलै रै गांव डोडियाणा में होयौ। आप जोधपुर रै जसवन्त कॉलेज सूं हिन्दी में प्रथम श्रेणी सूं सन् 1949 में अेम.अे. पास करनै कल्याण कॉलेज, सीकर में हिन्दी रा प्राध्यापक नियुक्त होया। सीकर कॉलेज में 14 बरस तांई नौकरी करनै उदयपुर विश्वविद्यालय में हिन्दी विभाग रा प्रोफेसर अर अध्यक्ष रैया अर उण ई विस्वविद्यालय रै राजस्थानी विभाग रै अध्यक्ष पद सूं सेवानिवृत्त होया। वै राजस्थान साहित्य अकादमी, उदयपुर अर राजस्थानी भाषा, साहित्य एवं संस्कृति अकादमी, बीकानेर रा सदस्य ई रैया। डॉ. जोशी हिन्दी में छायावादी सलीके री घणी ई कवितावां रची, पण वां कवितावां नै छपाई कोनी। हिन्दी में फकत दोय पोथी छपी– 'सुमित्रानन्दन का नवचेतना काव्य' (सोध–ग्रंथ) अर 'चिन्तन–अनुचिन्तन' चिन्तन प्रधान निबन्धां रौ संग्रै है। राजस्थानी री मोकळी पत्रिकावां में आपरी रचनावां छपी। 'ओळूं री अखियातां' वांरौ राजस्थानी संस्मरण–संग्रै है, जिण माथै वांनै साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली रौ राजस्थानी पुरस्कार मिळ्यौ।

पाठ–परिचै

संकलित संस्मरण 'सुरजो नायक' वांरै संस्मरण–संग्रै 'ओळूं री अखियातां' सूं लिरीज्यौ है। सुरजौ नायक अेक जीवंत पात्र है जिणरौ वरणन लेखक करयौ है। वौ अेक ताकतवार मिनख हौ। ताकत उण मांय इतरी है कै वौ अेकलौ ई पीठ माथै ऊखण'र पट्टियां मकान माथै चढाय देवै अर मिनख अचरज सूं देखता रैय जावै। दूजी घटना मांय दो नारेळां नै दोनूं हाथां सूं पकड़'र भच्च देणी भांग देवै। इण ताकत आळै सुरजै नै लेखक भूल नीं सक्यौ। आखिर मांय सुरजो कीं नसौ घणौ कर'र सुरग सिधारग्यौ।

सुरजो नायक

सुराज कांई आयौ, बळीतै तकात रौ गांव में टोटौ आयग्यौ। वौ भी जमानौ हौ, जद 'पो–म्हा' रै इसै ठारै में सिंझ्या री टैम, मिंदर में आरती री झालर बाजण रै सागै जागां–जागां सिगड़ियां चेत जाती। चीकणी गार सूं बणियोड़ी लूंठी सिगड़ियां में जाडी–जाडी कठफाड़ा पो'र रात गयां तांणी बळती रैवती, जठै जुड़'र भाई–सैण दुख–सुख री बातां करता। आज आखै गांव में मात्र दोय मातबिरां रै अठै सिगड़ी चेतै– कै तौ सेठ हीरालाल जी महेसरी री दुकान माथै अर कै जीवण चौधरी रै बारणै। कांकड़ में रूंखड़ा ई कोनी रैया, आवै कठै सूं बळीतौ? मुरदौ बाळबा खातर पण लकड़ी रौ तासौ रैवै। अर बिरखा पिण गैल रा बरसां में फोरी घणी रैयी। इंदर बाबै रै पिण, के बेरो के आंट फंस म्हेली है, जिकौ तूठै ई

कोनी! रूसियौ थकौ रैवै। गांव री माळ में कदे चाळीस बेरा चालता, ज्यां माथै खामां काढता सींचारां रा बोल माऊमाव टकरीजता, बठै आज चालै मात्र पांच। बाकी सै सूख'र खोड़ा हुयग्या। मझ ऊनाळै जोहड़ में दोबड़ी ऊभी रैवती गोडा–गोडांणी, जठै नैड़ा–नैड़ा गांवां रौ धन ढूकतौ, बठै आज इणी'ज गांव री मड़कल गायां जमीं सूंघती फिरै, चरबा नै तिणकलै रौ ई काम नीं। अर कितरौ धान निपजतौ हौ इणरै खेतां–जावां में। छोटा–मोटा करसां रै अठै थळ्या–मूंडै पड़ियौ रैवतौ। आज धान सूं गार री कोठी पिण नीं भरीजै। घरां में जाय'र देखौ तौ नाज हांड्यां में लाधै। कांई जमानौ आयग्यौ देखतां–देखतां ई! कांई बीजळी पड़ी है कै राम ई निकळग्यौ इण गांव रौ तौ। करसण री बढोतरी सारू सिरकार बापड़ी घणी'ज कोसीस राखै, घणा ई तरळा लेवै, पण धरती ई उत्तर दे देवै जरै कांई हुवै!

इण भांत नान्हो–मोटो काततो परमो ढोली कांमळी रौ खो'ल्यौ ओढ्यां चौधरियां रौ गिराळौ पार करै हौ। माथै में वीं रै कूकड़ी बणै लागी ही। जितरै तौ डावै पसवाड़ै सूं हेलौ आयौ– "आव, आव दमामी, इयां कांई चाल्यौ परबारौ ई? आव, हाथ सेकलै थोड़ा। ठारौ बेजां पड़ै है।"

परमै री कूकड़ी रौ तार टूट'र मांय रौ मांय ताकळै माथै डोढौ–बांकौ लपटीजगौ। रूई री पूणी पिण के बेरौ कठीनै बिलायगी! जीवण चौधरी री आवाज पिछाणी जरै रस्तौ छेड'र सांकड़ै आवतौ बोल्यौ– "पड़ै कांई है चौधरयां, नांव बूझै है। म्हारी ऊमर में तौ असी कोझी सरदी म्हूं को देखी नीं।"

"देखतौ कठै सूं? बूढीजण तौ हमै लागियौ है। आवती साल थनै ओजूं बेसी लागसी।" हमकाळै आवाज मोवन नाई री ही।

परमो थोड़ौ–सो मुळक्यौ। नैड़ौ आय'र देख्यौ– सिगड़ी धप्पळ–धप्पळ बळ रैयी ही। खेजड़ै रा तीन घोचा कीं बेसी लांबा होण सूं नीचै जमीं माथै तीन पसवाड़ै टिक रह्या हा अर वांरा ऊपरला बूंगा राता लाल हुयोड़ा माथै सूं माथौ जोड़'र लपट री धजा उडाता म्हा' महीनै री ठंड सूं जूझ रह्या हा।

सांम्हीसाम बैठौ हौ जीवण जीवण चौधरी– घमकदार पेच रौ धोळौ पोतियौ बांध्यां अर खांधै दोवड़ी कामळ ओढ्यां। ओस्था पचास नैड़ी आयोड़ी, तौ पिण चैरै रौ रौब–दाब देखण जोग। कानां री लोळ तांणी आयोड़ी कलमां अर भरियोड़ी डंकदार मूंछां। मूंडै माथै तेल पयोड़ी डांगड़ी जिसी पळपळाट, जिण में कदे–कदे सांम्ही पड़ी सिगड़ी रा धपळका पळकै। जीमणै पसवाड़ै मूंगियां रंग रौ गोळ–घसक रौ फेंटौ बांधियां अर डील माथै धोळौ खेसलौ न्हांकियां बैठ्यौ हौ मोवन नाई। जीभ माथै सुरसती बैठती। बात इसी ठावी करतौ जाणै टकसाळ में ढळ'र नीसरी हुवै। सांमला नै पडूत्तर नीं लाधतौ। आखर जोधराम रौ गुण कोई न कोई बेटा में तौ आवणौ ई हौ। पण जोधराज दारू सूं जतरौ आंतरौ राखियौ, मोवन बतरौ ई वीं रै सांकड़ै रह्यौ। दारू घणी पीण सूं वीं रौ चैरौ साव पतळौ पड़ग्यौ हौ अर होठ काळूंसीजग्या हा। इण बखत पिण वीं रै मूंडै सूं हळकी कसबू आय री ही। सिगड़ी रै डावै पसवाड़ै रातै पोतियै माथै धोळी घूघी ओढ्यां बैठौ है सांवतौ गूजर– चाळीस रै लंगै–ढंगै, पण गोरी चामड़ी माथै ओस्था री सळां हाल उघड़ी नीं ही।

उकडूं बैठ'र परमो आपरा हाथ खो'ल्यै सूं बारै काढिया अर सिगड़ी रा धपळकां में वांनै यूं उल्ट–पुल्ट करण लागौ, जाणै हाथ नीं, बाजरै रा सिट्टा सेक रह्यौ हुवै। थोड़ौ निवास आयौ जरै ढूडी टेक'र आराम सूं बैठग्यौ।

सांवतै रौ घर पक्कौ बण रह्यौ हौ। वीं कांनी मूंडौ फेर'र चौधरी बूझ्यौ– "थारै कमठै रौ कांई हाल है? पट्टियां चढगी हुसी आज तौ?"

अेक घोचै सूं सिगड़ी रा खीरा आघा–पाछा

करतौ सांवतौ पडूत्तर दियौ– ''कठै चढगी चौधरी? आजकाल रा मजूर न्याल करै है कांई? पो'र खंड दिन चढियां पै'ली तौ आवै ई कोनी। दो–दो वार वांनै बुलाण खातर जाऊं अर जियां–तियां भाई–बीरौ कर, पोटा–पोटू'र ल्याऊं तौ आवतां ई घेरौ घाल'र चिलम पीवण नै बैठ जावै। काम माथै कांई आवै जाणै म्हारै माथै अैसान करै। रीस तौ म्हनै अणूंती ई आवै, पण करूं कांई, मजबूरी रौ नांव महात्मा गांधी। आज पिण सूरज मथारै आयौ जठा तांणी तौ हाथ ई नीं घाल्यौ पट्टियां में, जाणै वां रै लारै सांप बैठ्यौ हुवै। फेर दो'रा–सो'रा होय'र नीठ आठ पट्टियां चढाई, जितरै तौ दिन तुरतुरयोक रैयग्यौ। बोल्या कै व्हैगौ काम आज रौ तौ।''

मोवन नाई सूं रैवणी कोनी आयौ। धोती रा चिल्ला साथळां रै पळेट'र गोडां माथै खींचतौ वौ ऊकडू होयग्यौ। बोल्यौ– ''है कठै मजूर? पांच–चार ढंकळ हुयोड़ा नवादू छोरा? वां रा बाप ई करी कदे मजूरी? मजूरी करण आळै रै डील में ओसांण चाईजै, ओसांण। थारला अै मजूरिया च्यार जणां भेळा होय'र सांकळां घाल'र ऊंच तौ लेवै पट्टी, पण वीं नै ले'र चालै जरै हेठानी पगां रा टांट्या लड़ै। इल्ल्यां है इल्ल्यां धान री, ज्यांनै पींचौ तौ पाणी नीसरै– रगत रौ तौ लवलेस ई कोनी।''

लकड़ी रा बूंगा बळता–बळता छेती खायग्या हा। वां रा खीरा झाड़'र माथा पाछा जोड़'र खवास ओजूं सरू होयग्यौ– ''अर साची बूझै चौधरी तौ इस्या मौकां माथै सुरजो नायक याद आवै। होतौ आज बिलालो तौ अेकलौ ई तीस पट्टियां अेक चिलम पीवां जितरी देर में– सड़्... सड़्... जरै ई सरका देवतौ।

''अेकलौ पट्टी चढा देवतौ?'' सांवतै री आंख्यां इचरज सूं चौड़ी होयगी। मोवन नाई रा गोडा आंच सूं तपग्या हा। दोयूं हाथां सूं वांनै पंपोळतौ वौ लारै सरक'र जबाब देवतौ, उण पै'ली तौ परमो ढोली ऊकडू होय'र सरू हुयग्यौ– ''और नईं तौ कांई दुकेलौ? म्हारै रूबरू री बात है। वा कूंट दीसै है के, बठै साहजी सा री हेली बण री ही। पट्टियां चढणी ही। कारीगर (सुरजो) पट्टी झेलबा खातर भींत माथै बैठौ हौ। हेठै चार मजूरया कूकरियां री जियां पट्टी सूं उळझ रह्या हा। उडीकतां–उडीकतां कारीगर आघतौ हुयग्यौ। सेवट खाय बूंबळ'र हेठै कूद आयौ अर धोती रा खो'जा टांकतौ बोल्यौ– ''परै हो जावौ रे नाजोगां! सात दिनां रा उवास्या हौ कांई? आगै जा'र भाठौ ई तौ है, सीसौ तौ आथ कोनी! आघी म्हेलौ थांरी अै सांकळां–फांकळां अर बैठ जावौ आंतरै जा'र।'

''डील में बीं रै, के बेरौ हड़मानजी आया कै भैरूंजी, आडी पट्टी जोधपुर री बा'रा फुटी पट्टी री कोरां गै'री झाली अर जोर री अेक 'हुम्' रै सागै मगरां रौ झालौ दे'र ऊंच ली। आदमी कांई हो बजराक हौ। नान्हा–नान्हा पांवडा म्हेलतौ लदाण माथै आधौ ई कोनी चढियौ, जीं पै'ली तौ पट्टी रौ आगलौ बूंगौ उतरादी भींत माथै म्हेल दियौ। फेर पाधरौ हुय'र लारलै बूंगै नै– आपां टैण रौ चद्दर पकड़ां– जियां पकड़'र दिखणादी भींत माथै म्हेल दियौ। आधी कलाक तांणी वा 'हुम्' 'हुम्' चालती रही अर पट्टियां सटाक–सटाक म्हेलीजती गई। मजूरिया सांस रोकियां, सांप–सूंघ्योड़ा–सा चिरबळ–चिरबळ देखता रह्या। पूरी बाईस पट्टियां म्हेल'र पसेव सूं न्हायोड़ौ वौ बारलै नीमड़ै री छियां कांनी चाल्यौ जद वीं री साथळां री फूल्योड़ी मछलियां रौ सळसळाट देख'र लोगां रौ जीव धापियौ। चूनै रा खाली तसळा माथै लियां सागै काम करण वाळी मजदूरणियां रा मन तौ डोलर हींडै चढग्या।

''घर धणी साहजी सा खुद अेक सौ इग्यारै लंबर रौ तिलक लगायां सो–कीं देख

रह्या हा– आ डीघी पूजती काया, अर आ चौड़ी छाती जिकी इण बखत भरीजियोड़ै सांस रै समचै, बी'त बी'त भर ऊंची–नीची हुय रैयी; भरियोड़ै चै'रै माथै अै... मोटा–मोटा आंखियां रा डोळा, जिणां मांयला राता डोरा गै'रा लाल हुयोड़ा; पींडियां, साथळां अर बूकियां माथै जाणै पींड म्हेल्योड़ा; पेट मांय धंसियोड़ौ अरपतळी ना'र जिसी कमर; लीलै भाठै सूं कोर'र जाणै मूरत काढी हुवै; खराद माथै चढा'र जाणै उतारियौ हुवै– अस्यौ वौ सरूप लाग रह्यौ। साहजी सा सांकड़ै आ'र थुथकारौ न्हांखता बोल्या– धन है भाई सुरजा थनै थूं इण गांव रै पाणी री लाज है। बडेरा कैंवता आया है कै नर री पींडी रौ मोल नीं अर आदमी री ताकत रौ कूंतौ नीं, सो सुणी तौ केई वार, पण आज आंखियां देखी है।

सुरजौ बोल्यौ– "सो तो मायतपणौ है थांरौ, पण नारेळ–आरेळ कोनी बधारणौ कांई?"

साहजी सा जाणै ऊंचै सूं पड़िया। बरसां सूं कमाई खातर परदेस रैवण मांयकर असी जरूरी रीत तकात री वांनै सुध नीं आई। हमै उम्हीज'र नैड़ै ई ऊभै आपरै बेटै सूं बोल्या– "जिया रे रामजी दो–च्यारेक नारेळ मांय सूं। दातारी में रामजी पिण बाप सूं दोय हाथ आगै हौ। आधी बोरी नारेळां री कच्चोड़ै घर में पड़ी ही, सो जियां री तियां ल्याय म्हेली बारणै। सै कारीगरां अर मजूरां नै न्यारौ–न्यारौ नारेळ मिळियौ। अठीनै सुरजै रै हाथ में नारेळ आयौ, अठीनै वौ म्हेल वीं नै चांतरै रै भाठै माथै अर जोर सूं मारियौ मुक्कौ– जाणै घण पड़ियौ हुवै लुहार रौ– अर डाढी सूधै नारेळ री चिटकां बिखरगी।"

परमै ढोली री कूकड़ी रौ तागौ औरूं पिण नीं टूटतौ, पण इण बिचाळै चौधरी अेक नूंवो घोचौ म्हेल दियौ हौ सिगड़ी में, जिकौ कीं आलौ हुवण सूं धुंवौ दैण लाग्यौ। बायरै री सोय सूं धुंवौ पाधरौ परमै री आंख्यां में पूगियौ। सिगड़ी में फूंक दैण री बजाय दमामी लारै सरक'र ढूंडी टेक दी। सांवतौ अर मोवन बिलग्या जिकौ मार–मार फूंकां अर पाछी ध ापळकै चढाय दी सिगड़ी नै

जीवण बोल्यौ– "अेऽ बीं दिन तौ म्हूं हौ कोनी गांव में। उणरै दूजै दिन री बात है। ओई कोई पो'रेक दिन चढियौ हुसी। म्हूं सिवजी भूतड़ै री दुकान माथै बैठौ हौ कै सुरजो आयौ बठै कीं सौदो लेवण नै सिवजी वीं नै बूझ्यौ कै म्हे तो सुणी सुरजा का'ल थूं मुक्की री देय'र डाढीदार नारेळ फोड़ न्हांखियौ, जिकी साची बात है कांई? सुरजौ मुळक'श्र कह्यौ कै सेठां, अेकलौ बाईस पट्टी चाढी, जीं री सांच तौ बूझी कोनी, नारेळ फोड़बा री भली बूझी! बापड़ै अेक नारेळ रौ कांई तौ फोड़णौ? हां, अलबत्ता दोय नरेळ अेकण सागै फोड़बा रौ मौकौ आवै जरै कीं ठा पड़ै। दोय रा आंना अढाई लागै बापजी, कठा सूं लाऊं गरीब आदमी? सिवजी बोल्यौ– मन री काढणी हुवै जरै तौ लाऊं। फोड़ नांखै तौ नारेळ थारा, नींतर म्हूं पाछा म्हारी दुकान में म्हेल लेस्यूं। सुरजो हामी भरी, जरै सिवजी मांय जाय'र बोरी मांय सूं उकराळ–उकराळ'र दोय नुंवां अर सच्चम नारेळ टाळ परा'र ल्यायौ। सुरजो दुकान रै दासै माथै दोनूं नारेळां नै आडा, उपराथळी म्हेल'र डावै हाथ सूं ऊपरला नारेळ नै काठौ ढाब लियौ। जीवणी मुक्की तांण'र ऊंची लेयग्यौ जठै तांणी तौ ठा है, पण के बेरो कद, बा बीजळी बण'र पड़ी कै अेक चिटक उछळ'र म्हारी डावी आंख रै ऊपर– इण जगां लागी, जद ठा पड़ी कै नारेळ दोनूं बिखरग्या हा।"

सांवतौ दोनूं हाथां सूं पगां री खाज खुजळातौ बोल्यौ– "बाइफुन्ना जुवा घणा ओ... अठै तौ। वाढ्यां म्हेलै।" खवास कह्यौ– "थारौ लोही मीठौ है। म्हारै तौ नैड़ा ई कोनी आवै। सांवतौ थोड़ौ–सो मुळक्यौ अर लाजां मरतौ–सो बोल्यौ कै म्हारै थोड़ौ चूनै रौ इंतजाम करणौ है, जिकौ म्हूं तौ हमैं चालस्यूं

रै भायां!'' फेर आपरी घूघी नै जचाय, हाथां नै उणरै मांय लकोवतौ वौ ऊभौ हुयग्यौ अर बहीर पड़ियौ। अंधारै में जावती धोळी घूघी थोड़ी ताळ तौ दीसती रही, फेर होळै–होळै अलोप हुयगी।

तमाखू रौ लकड़ी रौ गट्टौ, जिणरै मूंडै में चिलम पिण फंस रैयी ही, उठा'र खवास कांनी आघौ करतौ चौधरी बोल्यौ– ''भर रे मोवन अेक चिलमड़ी!'' मोवन पडूत्तर दियौ कै कांई करबा नै? कुण काळजौ बाळै फाऊ ई? पीवण जोगी चीज री तौ बूझी कोयनी अर चिलमड़ी कर दी आगै!'' समझदार नै तौ इसारौ ई काफी। चौधरी मुळक परो'र ऊठ्यौ अर हेली रै मांय परौ गयौ। बावड़ियौ पाछौ, जरै दोवड़ी कामळ मांय सूं हाथ बारै काढ दारू री बोतल खवास रै मुंडागै म्हेल दी। रंग देखतां ई मोवन अर परमो दोनूं पिछांण ली कै 'गुलाब' है, अर चैरा पिण दोयां रा गुलाब जिस्या ई खिलग्या। मोवन डाट खोल परो'र दारू में आंगळी डबोई अर माताजी रै नांव सूं छांटा ऊपरांनी हवा में उडाया। फेर तीनूं जणां बारी–बारी सूं बोतल रै मूंडौ चेड चेड'र गुटक्यां लेवण लाग्या। मैफिल जमगी। थोड़ी–सी तर्राटी आई अर कानड़ा कीं ताता हुया जरै मोवन बोल्यौ– ''हमै तौ भर परमा चिलमड़ी!''

आंगळी सूं कुचर–कुचर'र परमो गट्टै सूं तमाखू काढी अर हथेळी माथै म्हेल'र जीमणै हाथ रै अंगूठै सूं डांखळां नै मसळ्या। कांकरी नै नाळ रै मूंडै जचाय'र चिलम में तमाखू दाब–दाब'र भरी। फेर दोय घोचां रै चींपियै सूं अेक नान्हो–सो खीरो सिगड़ी मांय सूं काढ'र चिलम माथै जचायौ अर होळै–होळै सारी। जीवण घूंट लेय'र बोतलड़ी परमा कांनी आघी करी जरै परमो चिलमड़ी मोवन नै पकड़ाई। घूंट भर'र परमो बूझ्यौ कै आ बात म्हारी समझ में कोनी आवै कै वा ई दाळ–रोटी सुरजो खातो अर वा ई दाळ–रोटी आपां खावां, पण...?''

चिलम रौ धुंवौ छोडतौ मोवन बोल्यौ– ''अरे... खायां सूं कांई हुवै, हजम होवणौ चाईजै। घणौ चोखौ खावै, जिकां नै घणी बेगी सिगरणी होवै अर फेर तरड़्यौ करता फिरै। सै'रां सूं आवै कोनी कांई पिलांदरा पड़िया सेठ–साहूकार आपणां बैदराजजी कनै परपट्यां लेवण खातर? आखौ–आखौ दिन गादी–तकियां माथै गुड़िया रैवै अर घड़ी दोय घड़ी सिंझ्या री टैम घूमण नै जावै, तौ मोटरां में। पछै खायौ–पीयौ हजम हुवै कीकर? रोटियां वां रै पेट में उणी'ज तरियां पड़ी रैवै जिण भांत पै'ली कटोरदान में पड़ी हुती। अेक कटोरदान सूं काढ'र दूजै कटोरदान (पेट) में म्हेल देवण सूं रोटियां डीलां थोड़ी लागै! सो हाजमो बडी चीज है। सुरजै रौ हाजमौ जबरदस्त हौ। भाठा पिण खा जावतौ तौ हजम हुय जावता। थूं हौ नीं रे चौधरी, जोसीजी म्हाराज रै पोतै रामेसर री जांन में... सैंसड़ै?'' चौधरी माथौ हलाय'र बतायौ कै कोनी हौ।

''जरै किसै बिल में बड़'र बैठग्यौ हौ? गांव में तौ लारै बूढा–ठाडा गिणती रा आदमी रैयग्या हा। बिसी जांन म्हूं तौ म्हारी जिनगी में देखी नीं। गाड्यां सूं गाड्यां जुड़गी अर बींद रौ रथ ठेट सथाणै रै आपेटै पूंचग्यौ जतरै कोठीगडौ आपणी आकस्यां में ई पड़ियौ हौ। जांन सैंसड़ै पूगी जद साम्हलौ धणी मंगजी उपाधियो आ'र जोसीजी नै हाथ जोड़'र कह्यौ कै बापजी, जांनी तौ इतरा ल्याया जिका चोखा पण इतरा बळदां खातर चारौ म्हूं कठै सूं ल्यासूं? जोसीजी आकरा पड़िया– तौ कांई... फाटगी? लखपती रौ... बण्यौ फिरै है? म्हांनै पाळा बुलावण रौ मन हो कांई? पागड़ा नीं ऊंचै तौ झेलिया क्यूं हा? भलौ फिकर करियौ। हमार पाछी जुता देस्यूं

आठ–दस गाड्यां, जिकी आथण तांई भर चारौ अर ले आसी म्हारै गांव सूं।

"दूजै दिन परभातै खीचड़ी–बाटां री कच्ची रसोई होणी ही। रीत मुजब पुरसगारी रौ घी पास कराबा खातर ब्याही मंगजी अेक चरी में घी भर'र जांन रै डेरै ल्याया। उण बगत जोसीजी अमल गाळ'र मसंद लगायां, गादी माथै बैठा होकौ पी रह्या हा। डावै पसवाड़ै बैठ्या हा भोळूजी चौधरी, वां रा खासमखास अर जीमणै पसवाड़ै बैठ्या हा म्हारला काकोजी जोधराज नाई। चरी म्हेल'र मंगजी जाजम माथै ई बैठण लाग्या जद जोसीजी ऊठ'श्र वांनै हाथ पकड़'र आपरै जोड़ै गादी माथै बिठाया। होकै री नळी नै ब्याहीजी रै मूंडागै करी, हालांकै जोसीजी जाणता हा कै मंगजी तमाखू पीवै कोनी। मंगजी सेती बठै बैठ्या सै जणां मुळकिया। पछै आपरै पोतै मांय सूं अमल रा कुटका हथेळी माथै लेय'र वां रै मूंडागै करिया, जिणां मांय सूं अेक छोटी–सीक कांकरी नै उठा'र मूंडै में ले लीं

"होकै री नळी नै पाछी मूंडै में लेवता जोसीजी बोल्या– कर रे जोधराज घी री पिछांण। काकोजी आंगळी डबो'र घी देख्यौ– कसबू ली। बोल्या– घी सांतरौ है।

भोळूजी चौधरी पिण देखियौ अर तारीफ करी। घी पास हुयग्यौ।

"सुरजौ पिण बठै बैठ्यौ हौ, लारलै पसवाड़ै औरां रै सागै। वीं सूं बूझणी आयग्यौ– ईं चरी में कतरोक घी है जजमान? मंगजी अपूठा मुड़'र सुरजै कांनी मींट बांध'र देखियौ। बोल्या– हुसी ओई कोई पूंणीक च्यार सेर। क्यूं... पीणौ है कांई?

–नईं, अयां ई बूझ्यो हो। अर थे कैवौ हो जजमान, तो पी लेस्यां।

–आधौ–परधौ कै पूरौ ई?

–पूरौ ई पी लेस्यां, आधौ–परधौ क्यूं?

–दस्तां छूट जावैली, तरड़्यौ करता फिरोला।

–अेकर जाऊं जजमान निमटबा खातर, जकौ तौ जाऊंला ई। दूजी वार लोटौ उठाऊं तौ हाथ पकड़ लीज्यौ।

–जरै पीवौ परा, म्हे ई देखां।

सुरजौ ऊठ'र आगै आयौ। अेक करी न दोय, उठाय चरी अर मूंडौ टेक्यौ जकौ गटक–गटक–गटक... चरी खाली हुयां ई आघौ कर्यौ। मगजी रौ मूंडौ देखौ तौ थाप खायोड़ौ।"

बोतलड़ी रौ पींदौ आयग्यौ जरै जीवण वीं नै सिगड़ी रै हेठै गुड़काय दी। परमो धुंवौ छोड'र चिलम मोवन कांनी आघी करी। दोनूं हाथां में चिलम ढाब'र मोवन सफ–सफ करतौ अेक जोर रौ सफीड़ लगायौ अर धुंवै नै काळजै में उतार लियौ, जठै सूं वौ होळै–होळै, रमतौ–रमतौ ऊंचौ आ'र नाक रै रस्तै बारै निकळतौ रह्यौ।

चिलम झेलतां जीवण बोल्यौ– "म्हूं तौ उण दिन रात पड़ियां मेड़तै सूं पाछौ आयौ जरै सुणी कै सुरजो तौ आज दारू पी'र मरगौ। वौ इसी अणूंती तौ कोनी पीवतौ हौ, फेर आ बात बणी कियां?"

मोवन पडूत्तर दियौ, "अजी, जोग टळै है कांई? दिनूंगै सिरावण कर'र राजी–खुसी कमठै माथै वहीर हुयौ जरै कुण जाणी ही कै वीं रौ आज रौ दिन आंथैलौ नीं। घर सूं बारै नीसर्यौ ई हौ कै गढ रै दरीखानै में बैठ्या ठाकर सा'ब बारी मांय सूं ई हेलौ पाड़ लियौ– आव रे सुरजा, आव। कमठै माथै तौ रोजीना ई जावै। अेक दिन नाघा ई सही। सुरजौ जाणग्यौ कै आज तौ ठाकर दिनूंगै ई बोतल खोल ली दीसै। गढ री छियां में वीं रा बाप–दादा पीढियां सूं रैवता आया, जिकौ बेराजी कियां करतौ ठाकरां नै? मझ दोफारां बावड़ियौ गढ सूं तौ आंखियां रा डोरा राता लाल हौ म्हेल्या हा। क्यूं नीं उणी'ज बखत वीं रै छोरै नारांण रै सगपण री बातचीत करण सारू कड़ैल सूं पांवणा आ जावै? अेक दिन

आगै–लारै कोनी आ सका हा कांई? पण जोग पीवणौ हौ।

"भावै जोग म्हूं बठी सूं नीसर्‌यौ। सुरजो म्हनै नैड़ौ बुला'र कह्यौ कै गोळ झूंपै में दोय माचा ढाळ दै अर छांन मांय सूं लाय'र पाणी री मटकी टिमची माथै म्हेल दै। म्हूं अै काम निवेड़ूं, जा पै'ली तौ वौ कलाळ रै घर सूं–नैड़ौ ई तौ है–दोय बोतलां नारंगी री लियायौ। अेक माचै माथै दोनूं पांवणा बैठिया अर दूजोड़ै माथै सुरजो अेकलौ। बठीनै छांन में रोट्यां री त्यारी हुय रैयी ही, जठै सूं अेक बाटकै में चार–पांचेक कांदा कटीज'र आयग्या। म्हूं चालण लाग्यौ जरै सुरजो बोल्यौ– बैठ–बैठ, जावै कठै है? खोल बोतलड़ी। अेक बोतल रौ डाट खोल'र म्हूं देवतां रौ छांटौ उछाळ्यौ अर बोतल पांवणां कांनी आघी करी। होळै–होळै मैफिल जमगी।

"अेक बोतल निठी जितरै पांवणां तौ तन्नैट होयग्या अर हाथ जोड़ लिया। म्हारी जीभ पिण आंटौ खावै लागी अर माथै में चकरी हींडौ चालग्यौ। सुरजै री आंख्यां रा डोळा– अै खीरा है क सिगड़ी में–इसा राता लाल हुयग्या। म्हारै कांनी देख'र सुरजो कह्यौ– "खोल रे मोवन दूजोड़ी, पांवणा री मनवार तौ हाल करी ई कोनी। म्हूं कह्यौ– कै पांवणा तौ अबै कोनी अरोगै अर थे पिण हमैं रैवण दो। घी री चरी कोनी है जिकौ..!

"निजरां कांई घुमाई, दो बळबळता खीरा म्हारै चैरै माथै म्हेल दिया। म्हूं मांय तांणी धूजग्यौ। म्हारै हाथां नै बोतल खोलणी पड़ी अर पांवणां री मनवार करणी पड़ी, पण वै क्यूं पीवण लाग्या? मूंडौ चेड–चेड'र बोतल सुरजै कनै पुगाय दी। आपां बळदां नै नाळ देवां हां क, जियां वौ ऊपर सूं ई डग डग डग आधी'क बोतल मूंडै में ऊंधा ली अर बोतल म्हनै झिलावतौ बोल्यौ– लै, पीऽ। थनै थारै मानै जिकां री आंण है नीं पीवी तौ। फेर अेक बीड़ी सिळगा'र माचै माथै आडौ होयग्यौ अर गाणौ गावै लाग्यौ। म्हूं सोची कै ईं नै हमैं नींद चिप जावै तौ चोखी, पण कुण जाण्यौ कै वौ तौ बडोड़ी नींद री उडीक में है।

"पाछौ ऊठ'र बैठौ हुयग्यौ। कोई कीं कैवै, जा पै'ली तौ बोतल उठा'र बचियोड़ी दारू पिण पधरा ली अर खाली बोतल नै जमीं माथै गुड़ाय दी। म्हैं तीनूं जणां डरग्या अर म्हांरौ नसौ उतरग्यौ। चांणचकी बोल्यौ– अरे मोवन, म्हारै माथै में औ ढीमड़ौ चालै है जकौ तौ ठीक, पण ईं री पनड़ी माळजादी आ घड़ी–घड़ी में पड़ै है क खटी...ड़ खटीड़– ईं नै परी तोड़'र बगा रे!

"म्हूं देख्यौ कै औ सीत में आयोड़ौ हुवै ज्यूं कियां करण लागग्यौ। जतरै तौ कुड़त्यै नै खोल'र बगा दियौ अर बोल्यौ– आ पांणी री मटकी म्हारै माथै ऊंधा दै, बळत फूट रयी है।

"मटकी रौ पांणी माथै आवतौ नीं दीस्यौ, जरै वौ माचै सूं ऊठ्यौ, पण खाय गरणाटी'र पाछौ पड़ग्यौ। फेर ऊठ्यौ अर झूंपै रै बारणै सूं नीसर'र सांम्हलै कोहर रै कोठै कांनी चाल्यौ– अधर पगां, डावै–जीवणै हींडा खावतौ– ज्यूं बायरै में रूई रौ चूंखौ उडै– जाणै आंधी रै फटकारां में पांयां रौ भिंटोरौ मारग सोध रह्यौ हुवै। कोठौ तौ कोठौ, खेळी तांणी पिण नीं पूग्यौ हौ कै आंख्यां माथै काच फिरग्यौ। खेळी रै बारलै खाबूचियै रै कादै–पाणी में गडूरड़ा रमै हा, जिणां रै बिचाळै जाय पड़ियौ– धड़ीम! डरियोड़ा गडूर कादौ उछाळता बारै भाज्या। वां मांय सूं दोयेक खाबूचियै रै सांकड़ा ऊभा थोड़ी ताळ चूं–चूं करता रह्या, जाणै बूझता हुवै कै औ अजब–गजब रौ गडूर कठै सूं आयौ। मिंट दस–पांचेक लागी अर वौ नाड़ न्हांख दी।"

परमै अर जीवण नै सिगड़ी रै खीरां में घणी ताळ सुरजो दीसतौ रह्यौ– कादै में कळीज्योड़ौ, दम तोड़तौ।

⌘⌘

अबखा सबदां रा अरथ

बळीतौ=ईंधन (जलाऊ लकड़ी)। टोटो=कमी। ठारै=ठण्ड़ (सर्दी)। आखै=पूरै (सम्पूर्ण)। कठफाड़ां–फाड़ियोडी लकड़ी। मुरदो=शव (लाश)। रूसियो=नाराज। मझ=बीच। उन्हाळै=गर्मी में। मड़कल=दुबली–पतली। नाज=अनाज। बूझै=पूछै। ओस्था=उमर। कसबू=गंध। अैसान=एहसान। ओंजू बेसी=ओर भी अधिक। हेठानी=नीचे से। उबास्या=भूखा (उपवास कियोड़ा)। पाळा=पैदल। अपूठा=पीछे। सेर=तौल की इकाई। चाणचकी=अचानक। गरणाटी=चक्कर। झाली=पकड़ी। पसेव=पसीना। माचा=खाट। सौदो=चीज–बस्त। होळै=होळै=धीरे धीरे। फाऊ=फोगट। ताता=गरम। हजम होवणौ=पचणौ। दिखणादी=दक्षिण दिसा में। सगपण=सगाई। तासौ=तंगी, कमी। गोडा–गोडांणी=(गोडां तांई) गोडां सूंणी। मड़कल=थाकोड़ौ, पतळौ, दुबळौ।

सवाल

विकळपाऊ पड्डूत्तर वाळा सवाल

1. 'सूरजो नायक' संस्मरण किण पोथी सूं सामिल करीज्यौ है–
   (अ) उणियारा ओळ्यूं तणा (ब) रोवणिया दासा
   (स) ओळूं री अखियातां (द) मन सूं कदै न वीसरै
   ( )

2. गांव में बळीतै तकात रौ टोटौ आयग्यौ–
   (अ) खेत खड़ण सूं (ब) अकाळ पड.ण सूं
   (स) धरती उतर देणै सूं (द) रूखां री कटाई सूं
   ( )

3. ''आव हाथ सेकलै थोड़ा, ठारो बेजां पड़ै है।'' आ बात कुण किणनै कही–
   (अ) चौधरी परमै नै (ब) मोहन परमै नै
   (स) परमै सांवतै नै (द) सांवतै मोहन नै
   ( )

4. ''भावै ई जोग म्हैं बठी सूं नीसर्‌यौ।'' बठी सूं कुण नीसर्‌यौ–
   (अ) मोहन (ब) सांवतो
   (स) सुरजो (द) जोधराज
   ( )

साव छोटा पड्डूत्तर वाळा सवाल

1. जोधराज आपरै जीवण में किण चीज सूं घणौ आंतरौ राखियौ?
2. साहजी नै किण रीत री सुध नीं आई?
3. 'गांव रै पांणी री लाज' किणनै बतायौ गयौ है?
4. सिगड़ी रा खीरां में कुण दीसतौ रैयौ?

छोटा पडूत्तर वाळा सवाल

1. संस्मरण अर रेखाचितरांम में अंतर स्पष्ट करौ?
2. ''साहजी सा जाणै ऊंचै सूं पड़िया।'' साहजी री आ गत क्यूं हुई?
3. ''समझदार नै इसारौ काफी।'' इण ओळी रौ आसय स्पष्ट करौ?
4. अरै खायां सूं कांई हुवै, हजम होवणौ चाईजै।'' आ ओळी कुण किणरै सारू कैयी?

लेखरूप पडूतर वाळा सवाल

1. सूरजै री ताकत रौ बखाण करण वाळी दो घटनावां रौ खुलासैवार वरणन करौ।
2. 'ओ संस्मरण हकीकत रौ बखांण करतां थकां सही मारग चालण रौ इसारौ करै।' सहमति–असहमति बाबत आपरा विचार प्रकट करौ।
3. इण संस्मरण री गद्य शैली री विसेसतावां नैं दाखला देय'र समझावौ।
4. 'सूरजो नायक' संस्मरण रौ संदेस आपरै सबदां मे विस्तार सूं उजागर करौ।
5. नीचै दिरीजी ओळियां री परसंगाऊ व्याख्या करौ–

(अ) मझ ऊनाळै जोहड़ में दोबड़ी ऊभी रैवती गोडां–गोडांणी, जठै नैड़ा–नैड़ा गांवां रौ धन ढूकतौ, बठै आज इणी'ज गांव री मड़कल गायां जमीं सूंघती फिरै, चरबां नैं तिणकलै रौ ई काम नीं। अर कितरौ धान निपजतौ हौ इणरै खेतां–जावां में। छोटा–मोटा करसां रै अठै थळ्यां–मूंडै पड़ियौ रैवतौ। आज धान सूं गार री कोठी पिण नीं भरीजै।

(ब) आजकाल रा मजूर न्याल करै है कांई ? पो'र खंड दिन चढियां पै'ली तौ आवै ई कोनी। दो–दो बार वांनै बुलाण खातर जाऊं अर जियां तियां भाई–बीरौ कर, पोटा पोटू'र ल्याऊं तौ आवतां ई घेरौ घाल'र चिलम पीवण नै बैठ जावै। काम माथै कांई आवै, जाणै म्हारै माथै अैसान करै।